साहित्य की समकालीन चुनौतियाँ

संपादक : डॉ. बाबू जोसफ़
सह संपादक : डॉ. ए.एस. सुमेष

प्रकाशक : अद्वैत प्रकाशन
ई-17, पंचशील गार्डन, नवीन शाहदरा
दिल्ली-110032
फोन : 011-22825606, 9971895162
adwaitprakashan@gmail.com

सर्वाधिकार : लेखक

प्रथम संस्करण : 2017

आईएसबीएन : 978-93-82554-84-4

मूल्य : ₹ 650/-

शब्द-संयोजन : कम्प्यूटेक सिस्टम, दिल्ली-110032

मुद्रक : कॉम्पैक्ट प्रिंटर्स, दिल्ली-110032

SAHITYA KI SAMKALEEN CHUNOTIYAN

Edited by Dr. Babu Joseph

अनुक्रम

संपादकीय 5

हिन्दी साहित्य में आदिवासी, दलित और महिला लेखन : वर्तमान सन्दर्भ 13
डॉ. देवेन्द्र कुमार

साहित्य और राजसत्ता 19
बजरंग बिहारी तिवारी

समकालीन हिन्दी कहानी और इक्कीसवीं सदी की चुनौतियाँ 22
डॉ. भावेश वी. जाधव

अमीरी रेखा–गरीबों की व्यथा कथा का ब्यौरा 30
डॉ. बाबू जोसफ

क्योंकि सरहद चाहे चेतना की क्यों न हो, एक समस्या ही है 41
डॉ. ए. एस. सुमेष

हिन्दी स्त्री आत्मकथाओं में अभिव्यक्त समकालीन चुनौतियाँ 45
डॉ. प्रत्युषा. एस. नायर

समकालीन कहानी में आतंकवाद की चुनौती 48
मैमूना पी.

समकालीन हिन्दी कविता की चुनौतियाँ 54
डॉ. ई. जी. डब्यू. पी. गुणसेना

समकालीन हिन्दी कहानी में दलित विद्रोह 57
नीतू जोर्ज

मालती जोशी के उपन्यासों में चित्रित नौकरीपेशा नारी 62
डॉ. धन्या सदानंदन

मानवीय संकट बनाम समकालीन कविता की चुनौतियाँ 67
डॉ. प्रिया ए.

सांस्कृतिक चुनौतियाँ
आशा जी नायर 141

हिंदी कहानी साहित्य और स्त्री जीवन
डॉ. एमेकर पवन नागनाथ 144

समकालीन हिन्दी कविता में मानवीय सरोकार
डॉ. कंचन गोयल 149

समकालीन कथा साहित्य में नारी
संगम वर्मा 155

समकालीन कथासाहित्य की चुनौतियाँ
प्रि. डॉ. मधुकर पाडवी 161

समकालीन कविताओं में वर्तमान समय के सवालों और चुनौतियों का साक्षात्कार
प्रा. डॉ. महेश एम. पटेल 168

अमरकान्त के उपन्यासों में अभिव्यक्त नारी जीवन
डॉ. राय जोसफ 177

समकालीन हिन्दी कहानी की चुनौतियाँ
डॉ. श्रीलता पी. 183

इक्कीसवीं शताब्दी में हिन्दी साहित्य के समक्ष चुनौतियाँ– तमिलनाडु के परिप्रेक्ष्य में
डॉ. के. विजयभास्कर नायडू 186

हिन्दी साहित्य में दलित आत्मकथाएँ
डॉ. एस. शबीर बाशा 189

प्रभा खेतान के उपन्यासों में भूमण्डलीकृत स्त्री
डॉ. मेली के पुन्नूस 194

व्यवस्था में पिसता आदमी उदप्रकाश की कहानी
डॉ. जेस्टी इमानुवेल 200

समकालीन हिन्दी कहानी की चुनौतियाँ

डॉ. श्रीलता पी.

प्रेमचंद के बाद सातवें दशक तक की हिन्दी कहानी में गुणात्मकता एवं परिणामात्मकता की दृष्टि से श्रेष्ठ उपलब्धि हुई थी। परंतु आठवें और नौवें दशक की कहानी यद्यपि संख्या में ज्यादा हुई है तो भी गुणात्मकता की दृष्टि से आगे नहीं आ सकी।

आज की हिन्दी कहानी पढ़े तो यह समझ सकता है कि हिन्दी कहानी सामयिक परिवर्तनों के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने की क्षमता नहीं कर पा रही है। आज मानव वैविध्यपूर्ण जीवन जी रहा है। जिन्दगी में इतनी विभिन्नता है कि कहानी के बहुत से विषय हो सकते हैं। आदमी कितना परेशान है! रोज हत्याएँ, आत्महत्यायें हो रही हैं। अर्थात् रोज-रोज आदमी का मोह जिन्दगी से टूट रहा है। अमूल्य जीवन को त्यागने की मानसिकता कितनी भयानक है वह एक तरह का प्रतिशोध है। ऐसी उस खानेवाले मानसिकता को अभिव्यक्त करनेवाली कहानियाँ बहुत कम हैं। इसके कई कारण होते हैं। कहानी उस दिशा में नहीं रची गई है जिस दिशा में उसे रचा जाना चाहिए था। यह दिशा है– ग्रामीण क्षेत्र की समस्याओं, परेशानियों, व्यवस्थाओं एवं स्थितियों पर लिखी जानेवाली कहानियों की। आज का लेखक कोई अध्यापक है, कोई सरकारी कर्मचारी है और कोई व्यापारी है। ऐसी स्थिति में खेतीबारी की, गाँव की समस्याओं की प्रामाणिक रचना कैसे आयेगी? यह तो सत्य है कि कहानियाँ आज बढ़ी हैं, पत्र-पत्रिकाओं की संख्या में वृद्धि हुई है। निश्चय ही कहानी लेखकों की संख्या में पहले की अपेक्षा अभिवृद्धि हुई है। लेकिन हमारे पास विश्व स्तर की उत्कृष्ट कहानियाँ कितनी हैं? स्तरीय कहानियों की संख्या कम होने का कारण क्या है? यह सोचने-विचारने का विषय है। आज लेखकों में अनुभव की कमी है। हम जिस वातावरण या परिवेश में जी रहे हैं वहाँ जनसामान्य से जुड़ने का अवसर दूसरे की समस्याओं में भागीदारी का अवसर कम है। हमारा आग्रह होता है कि संघर्ष की शोषण की हड़ताल की आन्दोलन की क्रांति की कहानी लिखेंगे और हम ऐसी जिन्दगी जीते हैं–समझौते की, गद्दारी की, दुच्चई की। यदि हमारे पास गद्दारी और